ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 318-321

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

1850 से 1900 के मध्य जनांकिकीय संक्रमण–काल (परिवर्तन) का सिद्धान्त

अनलेश कुमार Email : dranleshau@gmail.com

Received- 25.10.2020, Revised- 29.10.2020, Accepted - 03.11.2020

सारांश– ***संसार में यदि जनसंख्या के विकास के इतिहास पर दृष्टिपात किया जाये तो एक बात स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है कि जनसंख्या का विकास विभिन्न अवस्थाओं में चाक्रिक रूप से होता है। जनसंख्या परिवर्तन की विभिन्न अवस्थाओं को मूलतः मृत्यु–दर के सम्बन्ध को ध्यानगत रखकर विद्वानो ने बाँटा है। इन अवस्थाओं की अपनी–अपनी विशेषतायें होती हैं। इन अवस्थाओं को जन्म–दर एवं मृत्यु–दर की विभिन्न प्रक्रियाओं की विशेषताओं से सम्बन्धित करके बाँटा गया है। इन्हीं विशेषताओं के कारण या तो जनसंख्या का आकार बढ़ता है या स्थिर रहता है या फिर घटना है। इस प्रकार के परिवर्तनों को ही ध्यान में रखकर जनस्वास्थ्य सेवाओं आदि की तरफ ध्यान दिया जाता है। जनांकिकीय विद्वान श्री सी0पी0 ब्लेकर बर्गडौरफर, साइमन, सैक्स, लान्ड्री, थाम्पसन, नोत्स्तीन, डोनाल्ड काउगिल तथा संयुक्त राष्ट्र आदि ने जनसंख्या चक्र की अवस्थाओं पर अपना मत व्यक्त किया है जिनका उल्लेख हम नीचे की काण्डिका में करेंगे।***

कुंजीभूत शब्द– जनांकिकीय संक्रमण–काल, मृत्यु दर, चाक्रिक रूप, दृष्टिपात।

एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, नेशनल पी.जी. कालेज, भोगाँव–मैनपुरी, (उ0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक

जनसंख्या विकास की अवस्थायें– सी0पी0 ब्लेकर का मत– जनसंख्या विकास की अवस्थाओं को सी0पी0 ब्लेकर ने मुख्यतः पाँच खण्डों में विभाजित किया है जो इस प्रकार है।

ऊँची–स्थिर– यह जनसंख्या विकास की वह अवस्था है जिसमें जन्म–दर एवं मृत्यु दर दोनों ही अधिक होने के कारण जनसंख्या ऊँची अवस्था पर लगभग स्थिर सी रहती है। इस अवस्था में लगभग जन्म एवं मृत्य दर 40–50 हजार के बीच पाई जाती है तथा जन्म एवं मृत्यु दर एक दूसरे का कारण तथा परिणाम होता है। ऊँची अनियन्त्रित जन्म एवं मृत्यु दर के कारण जनसंख्या में स्थिरता भी लगभग ऊँचे आकार पर पाई जाती है। ऊँची स्थिर अवस्था में पाये जाने वाले देशों में प्रायः कृषि पर निर्भरता पाई जाती है जिसके कारण जीवन स्तर नीचा होता है और फिर ये देश उन सभी विशेषताओं से सुसज्जित होते देखे गये हैं जो अविकसित देश में पाई जाती है। इन देशों में माल्थस का निरोध (महामारी, अकाल, बाढ़ आदि) जनसंख्या की वृद्धि को सामान्य स्तर पर ला देता है। विश्व की 22 प्रतिशत जनसंख्या 1930 तक इसी अवस्था में पाई गई है। 1930 से पहले भारत चीन भी इसी अवस्था में थे। आज भी इस अवस्था में अफ्रीका का सूडान, नाइजीरिया, इथोपिया, कांगो, घाना, कीनिया, तन्जानिया, अंगोला, रोडेशिया आदि देश तथा मध्य अमेरिका का ग्वाटेमाला और दक्षिणी मेक्सिको देश में पाये जाते हैं।

शीघ्र प्रसार– यह जनसंख्या विकास की वह स्थिति होती है जिसमें उत्पत्तिक्रम (जन्म–दर) या तो पहली ही अवस्था की भाँति ऊंचा होता है या फिर उसमें स्थिरता आ गई होती है किन्तु ह्रास–क्रम (मृत्यु–दर) में पहले की अपेक्षा धीरे–धीरे कमी आने लगती है जिससे जनसंख्या का आकार बढ़ने लगता है। यह ह्रास (मृत्यु–दर) में मानव को स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धताओं के कारण होने लगता है। इस अवस्था में मृत्यु दर कम भी होती देखी गई है। इस अवस्था में आज भारत, पाकिस्तान व चीन हैं तथा अन्य वे समस्त देश जो 1, 3, 4, 5 अवस्था में नही हैं जिनके कुछ नाम इस प्रकार हैं– पूर्वी, दक्षिणी एवं मध्य एशिया के समस्त देश (केवल जापान एवं साइबेरिया) को छोड़कर इण्डोनेशिया, कोरिया, ब्रह्म, लंका, ईराक, टर्की, अरब आदि देश इसी अवस्था में हैं। इनके अतिरिक्त उत्तरी अफ्रीका में मिश्र, लीबिया, अल्जीरिया तथा मोराको आदि भी हैं। इन राष्ट्रों में कृषि में उन्नति देखी जाती है जिससे उत्तम प्रकार की खाद एवं बीज के सहारे अकाल आदि पर विजय प्राप्त कर भोज्य सामग्री उपलब्ध की जाती है और खनिज पदार्थो वाले क्षेत्र में औद्योगीकरण होता है। 1930 तक विश्व की 40 प्रतिशत जनसंख्या इसी अवस्था में थी।

विलम्बित प्रसाद– इस अवस्था में जनसंख्या में वृद्धि धीरे–धीरे होती है। इसका कारण यह होता है कि इस समय तक उत्पत्ति एवं ह्रास दोनों ही क्रमों को कुछ सीमा तक नियन्त्रित कर लिया जाता है।

इसमें जन्म–दर, मृत्यु दर की अपेक्षा अधिक ही रहती है। यह करीब–करीब 16–20 तथा 12–15 प्रति हजार तक क्रमशः पहुँच जाती है। यह विकास की प्रारम्भिक अवस्था के बाद की अवस्था होती है। इस श्रेणी के राष्ट्रों में कृषि अपनी उन्नति की ओर अग्रसर हो चुकी होती है और उद्योगों के महत्वों को स्वीकार किया जा चुका होता है। औद्योगीकरण के कारण शहरीकरण भी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

तेजी से होता है।

इस अवस्था में 1930 तक विश्व की 22 प्रतिशत जनसंख्या थी। आज इस अवस्था में सोवियत संघ, संयुक्त राज्य, जापान, चिली, कनाडा आदि देश हैं।

नीची स्थिरता– इस अवस्था में जन्म व मृत्यु दानों ही दरें पूर्णरूपेण नियन्त्रित तथा नीची होती हैं जिसके कारण जनसंख्या में वृद्धि कुल मिलाकर होती ही नहीं। यह लगभग नीची स्थिति में होती है। 1930 तक विश्व की 14 प्रतिशत जनसंख्या इस अवस्था में थी। इस स्थिति के देशों को नीची जन्मदर के कारण यह भय बना रहता है कि भविष्य में जनसंख्या घट न जाय। पश्चिमी यूरोप के सभी देश आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, तस्मानियाँ यू0एस0ए0 ब्रिटेन, जर्मनी आदि हैं, इनको सदा यह भय बना रहता है कि इनकी जनसंख्या उनकी इस स्थायी अवस्था से भी कहीं कम न हो जाय। फ्राँस पूर्णरूपेण अपनी शक्ति (मानव) को बनाये रखने के लिये प्रयत्नशील है और ऐसे प्रयत्न प्रायः इस स्थिति में पहुँचे सभी देशों में भी हैं।

घटने वाली– यह जनसंख्या विकास की वह अवस्था है जिनमें जन्म दर, मृत्यु दर की अपेक्षा कम होती है जिससे जनसंख्या समय के साथ–साथ धीरे–धीरे घटने लगती है। यह अवस्था प्रायः उन अविकसित देशों में पाई जाती है जहाँ मृत्यु दर में आकस्मिक कमी (अकाल, बाढ़, सूखा, युद्ध, छूत की बीमारियों के कारण) पाई जाती हैं। 1930 से पहले विश्व की 2 प्रतिशत जनसंख्या इस अवस्था में थी। इस स्थिति में फ्राँस एक ज्वलंत उदाहरण है।

थाम्पसन, बोग तथा नोत्स्तीन का विचार– इन विद्वानों ने वर्तमान समय में उपलब्ध अवस्थाओं को ही अपने अध्याय के अन्तर्गत लिया। इनका मत है कि आज सी0पी0 ब्लेकर द्वारा बताई गई पॉच अवस्थाओं में से केवल बीच की तीन अवस्थायें ही मौजूद हैं। प्रथम तथा अन्तिम अवस्था अब किसी देश में नहीं पाई जा रही हैं। आज विश्व का कोई भी देश न तो पूर्णरूपेण अविकसित ही है और न पूर्णरूपेण विकसित ही। ऐसी स्थिति में इन विद्वानों का मत है कि आज प्रत्येक देश में जनसंख्या की अनियन्त्रित वृद्धि के परिणाम के प्रति जागरूकता देखी जा रही है। प्रत्येक जनसंख्या को रोकने का प्रयत्न कर रहा है। ऐसी स्थिति में सभी देशों में जन्म–दर से मृत्यु दर कम हो गई है। इस प्रकार किसी देश की जनसंख्या को न तो स्थिर ही कहा जा सकता है और न घटती ही हुई। इस प्रकार इन्होंने जनसंख्या अवस्था के तीन ही वर्ग माने हैं–

प्रथम अवस्था या परिवर्तन से पूर्व की अवस्था– यह जनसंख्या वृद्धि की वह अवस्था है जिसमें जन्म एवं मृत्यु दोनों ही दरों पर किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं होता है इसमें जनसंख्या वृद्धि की अधिक सम्भावनायें होती हैं। यह ब्लेकर की प्रथम अवस्था के बाद वाली अवस्था से मिलती–जुलती है।

द्वितीय या परिवर्तन की अवस्था– यह जनसंख्या वृद्धि की वह अवस्था है जिसमें जन्म एवं मृत्यु दोनों ही दरों में कमी आने लगती है। किन्तु जन्म दर में ह्रास की तब तक चलती रहती है, जब तक देश विकास की तीसरी अवस्था में नहीं पहुँच जाता है। इस प्रकार की प्रक्रिया में जनसंख्या में धीरे–धीरे वृद्धि होती रहती है। बोग ने इसको अन्य तीन उपखण्डों–पहले, मध्य तथा बाद में बांटा गया है जो कि ब्लेकर की दूसरी, तीसरी तथा चौथी अवस्थाओं के समान है।

तृतीय या परिवर्तन के बाद की अवस्था– यह ब्लेकर द्वारा बताई गई चौथी अवस्था से मेल खाती है जिसमें देशों का विकास इस सीमा तक हो जाता है कि जन्म एवं मृत्यु दर बड़ी ही नीची अवस्था पर पहुँचकर स्थिर हो जाती है। इस समय समस्त लोगों को गर्भ–निरोधकों का पूर्ण ज्ञान होता है। इस प्रकार लोगों का जीवन–स्तर ऊंचा होने से जनसंख्या वृद्धि या तो शून्य हो जाती है या फिर उसके चारों तरफ चक्कर लगाती है।

लान्ड्री का मत– लान्ड्री के जनसंख्या विकास की अवस्था की आधार–शिला प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कैण्टिलन का जनसंख्या विचार है। यह अपने जनॉकिकीय परिवर्तनों को तीन मुख्य भागों में बॉटता है, जिसको उसने जनॉकिकीय सत्ता (या राज्य) कहा है। इसमें वह खाद्यान्नों के उत्पादन तथा आर्थिक उन्नति को जनसंख्या सम्बन्धित करने का प्रयास करता है। उसके द्वारा बताई गई ये अवस्थायें निम्नलिखित हैं।

प्राथमिक राज्य– यह जनसंख्या परिवर्तन की वह अवस्था है जिसमें जनसंख्या में परिवर्तन पूर्णरूपेण खाद्यान्न की पूर्ति (परिवर्तन) पर निर्भर करती है। लाण्ड्री का अपना विश्वास था कि मृत्यु दर बहुत कुछ उपलब्ध खाद्यान्न की मात्रा से प्रभावित होती है। यदि गणितीय भाषा में कहा जाय तो इसी को हम इस प्रकार भी कह सकते हैं– 'जनसंख्या परिवर्तन, खाद्यान्न वृद्धि का सीधानुपाती है। खाद्यान्न के बढ़ने से जनसंख्या बढ़ती है। खाद्यान्न के घटने से जनसंख्या घटती है।

माध्यमिक जनाँकिकीय राज्य– इस अवस्था में लाण्ड्री ने जनसंख्या परिवर्तन को खाद्यान्न की अपेक्षा आथ्रिक उन्नति से सम्बन्धित किया है। जनसंख्या अपने वर्तमान जीवन स्तर को बनाये रखने के लिये प्रयत्नशील रहती है, तदनुसार विवाह देर से या शीघ्र करके अपने ऊपर नियन्त्रण रखना शुरू कर देती है। जैसे–जैसे आर्थिक उन्नति होती जाती है राष्ट्र अपनी उन्नति को बनाये रखने के लिये स्वतः जनसंख्या नियन्त्रण के साधनों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर देती है।

आधुनिककाल– यह जनसंख्या परिवर्तन की वह अवस्था है जिसमें जनसंख्या वृद्धि किसी नियम का

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

पालन नहीं करती है। आर्थिक उन्नति तथा खाद्यान्न के उत्पादन का इस अवस्था में जनसंख्या वृद्धि से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता है। इस अवस्था में जन्म दर गिरने के कारण जनसंख्या वृद्धि में ह्रास शुरू हो जाता है। इस अवस्था को लोग जनसंख्या क्रान्ति की अवस्था के नाम से भी जानते हैं।

कार्ल सैक्स कामत– अन्य मतों की भाँति कार्ल सैक्स का भी मत है। इन्होंने जनसंख्या की चार अवस्थायें बताई हैं जो निम्न प्रकार है:

प्रथम अवस्था– यह अवस्था सामान्यतः आर्थिक रूप से अविकसित देशों में पाई जाती है। इसमें जन्म एवं मृत्यु–दर अपने उच्च शिखर पर स्थिर होने के कारण जनसंख्या में भी स्थिरता की प्रवृत्ति देखी जाती है।

द्वितीय अवस्था– इस अवस्था में जन्म दर में स्थिरता पाई जाती है तथा मृत्यु–दर में क्रमशः गिरावट देखी जाती है। मृत्यु दर में कमी का कारण इन विकासशील देशों में जनस्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में उन्नति है। इसके कारण जनसंख्या में वृद्धि तेजी से होती है।

तृतीय अवस्था– यह अवस्था भी विकासशील देशों में पाई जाती है। इसमें जनस्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा के क्षेत्र में वृद्धि के कारण मृत्यु दर अपने निम्नतम स्तर पर स्थिरता को पाने लगती है। विकास की गति इतनी तीव्रतर से होती है कि लोगों का जीवन का स्तर उठने लगता है जिससे जन्म–दर में धीमी गति ह्रास देखा जाने लगता है जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि पर धीमी गति से होने लगती है।

चतुर्थ अवस्था– इस अवस्था में फिर मृत्यु एवं जन्म प्रक्रिया में साम्य उपस्थित हो जाता है। किन्तु यह साम्य बड़े नीचे स्तर पर होता है जिससे जनसंख्या लगभग स्थिरता को प्राप्त कर जाती है। यह अवस्था विकसित देशों में पाई जाती है।

सैक्स का विचार था कि मध्य की दोनों ही अवस्थायें जनसंख्या क्रान्ति की है। इन्हीं दोनों में इसमें परिवर्तन होता है। प्रथम तथा अन्तिम अवस्थायें तो साम्य की अवस्थायें हैं।

सैक्स द्वारा बताई गई चारों अवस्थायें दिखाई गई हैं। यह आवश्यक नहीं कि एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचने के लिये समान समय की आवश्यकता पड़ती है। इस काल के बारे में सैक्स चुप रह गया है।

डोनाल्ड ओल्डन काउगिल का मत– इनके मतानुसार जनसंख्या में विकास चाक्रिक ढंग से होता है। एक अवस्था के बार दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी चौथी के बाद पहली का अभ्युदय होता है। यह विकास चक्र, या जनसंख्या वृद्धि से, या फिर जन्म–दर में वृद्धि से या फिर मृत्यु दर में कमी से उत्पन्न होता है। कुछ विद्वानों का मत है कि उपर्युक्त सभी वर्गीकरणों में एक अवस्था और होनी चाहिये जिसमें जन्म दर के नीचा व स्थिर रहते हुये भी मृत्यु–क्रम से ऊँचा ही रहता है जिसके कारण जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होती है या फिर जिसमें जन्म–दर, मृत्यु दर से कभी कभी ज्यादा होती रहती है या फिर जिसमें जन्म दर, मृत्यु दर से कभी–केभी ज्यादा होता रहती है जिसके कारण कभी जनसंख्या में वृद्धि हो जाती है या फिर स्थिरता आ जाती है। इस दिशा में काऊगिल का मत सर्वथा भिन्न है जो इस प्रकार है।

माल्थूसियन या प्राथमिक चक्र– यह वह अवस्था है जिसमें माल्थस के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के अनुसार जनसंख्या में विकास होता है। इसमें जन्म दर तो ऊँची रहती है, किन्तु मृत्यु दर में चढ़ाव उतार देखा जाता है, जो कि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण उत्पन्न होता है। यह प्रायः कृषि प्रधान देशों में पाई जाती है जिसमें मृत्यु–दर पूर्णरूपेण खाद्यान्नों की उपलब्धता, महामारियों के प्रकोपों, बाढ़, सूखा आदि के द्वारा प्रभावित होती है। इतना ही नहीं कृषि में तो स्वयं उतार–चढ़ाव चाक्रिक ढंग के पाये जाते हैं जो कि इसे प्रभावित करते हैं। कभी उत्पादन अधिक तो कभी कम। यह चक्र भारतीय कृषि में 5.7 वर्षो के अन्तराल पर पाया जाता है।

भारत तथा अन्य कई देशों में 1910 के पहले यह चक्रय प्रायः देखा जा सकता था। मृत्यु दर गिरने से यह चक्र शुरू होता है और बढ़ने से यह चक्र बन्द हो जाता है। थाम्पसन ने यूरोप की जनांकिकीय दशा का वर्णन करते हुये लिखा है कि पूर्व औद्योगिक काल में मृत्यु दर जन्म दर से थोड़ी ही कम रहती थी। मृत्यु दर में ही हमेशा क्रान्तिकारी परिवर्तन होते रहते थे और पूर्व–औद्योगिक वर्षो में जनसंख्या दीर्घ काल तक स्थिर बनी रहती थी।

आधुनिक चक्र– यह जनसंख्या चक्र की वह अवस्था है जिसमें जन्म दर मृत्यु दर की अपेक्षा धीमी गिरती है, जिससे कि जनसंख्या में तीव्रता से वृद्धि होती है और ज्यों ही दोनों की गति में समानता आने लगती है, जनसंख्या वृद्धि भी समान रूप से होने लगती है। इस अवस्था को संक्रामक काल भी कहते हैं।

भावी चक्र– यह किसी देश की जनसंख्या चक्र की वह अवस्था है जिसमें कि मृत्यु दर के निम्न स्तर पर स्थिर हो जाने तथा जन्म दर के चढ़ाव उतार के कारण देश में बच्चों का जन्म अधिक होने लगता है जिसे दूसरे शब्दों में कहता है कि बच्चों की बाढ़ आ जाती है। दूसरी स्थिति में ऐसा भी होता कि जन्म दर एक निश्चित स्थिति पर समान हो जाती है और मृत्यु दर में कमी आने के कारण बच्चों की बाढ़ सी आ जाती है। Cowgill का विचार है, भविष्य में यही चक्र चलते हैं। यह स्थिति अल्पकालिक होती है। लंका में यह स्थिति 1850–1900 के बीच थी।

सम्भावित चक्र– यह दूसरी

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

अवस्था अर्थात आधुनिक अवस्था के ठीक विपरीत की है। इसमें मृत्यु दर में जन्म दर की अपेक्षा अधिक वृद्धि होती है वैसे वृद्धि दोनों ही अवस्थाओं में होती है। दूसरे शब्दों में, यह वह अवस्था है जिसमें जन्म तथा मृत्यु दर दोनों ही बढ़ रही हों तथा मृत्यु–दर से जन्म–दर अधिक बढ़ रही हो। ऐसी स्थिति में भी जनसंख्या बढ़ती रहेगी। Rubert B. Vance ने लिखा है कि Cowgill की यह अवस्था ''जनाँकिकीय इतिहास'' में कभी भी नहीं देखी गई है। वैसे इनका मत है कि यह अल्प–विकसित देशों में अधिक पाई जाती है।

दीर्घकालीन जनसंख्या चक्र– यह जन्म दर के अधिक होने या मृत्यु दर के कम होने के कारण होती है। इसका रूप ''एस'' की तरह होता है। इसके विपरीत की स्थिति में जनसंख्या में कमी आने लगती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, डॉ0 एस0के0 : जनांकिकी के सिद्धान्त।
2. श्रीवास्तव, श्रीमती इला : जनसंख्या का अर्थ व समाजशास्त्र।
3. डॉ0 वि0कुमारः जनांकिकी, साहित्य भवन आगरा–3.
4. शुक्ला, श्रीवास्तवः जनसंख्या का शास्त्र एवं समाजशास्त्र।
5. मिश्रा, विनीतः 'आर्थिक विचारों का इतिहास'।
6. श्रीवास्तव, कालाः जनसंख्या का अर्थ व समाजशास्त्र।
7. श्रीवास्तव, डॉ0 एस0सी0: जनांकिकी सिद्धान्त, तकनीकी एवं अध्ययन।
8. अग्रवाल, एस0एन0: इण्डियाज पोपूलेशन प्रोब्लम।
9. बरट्रेन, जी0: पोपूलेशन ट्रेड्स एण्ड बल्डस बायोलॉजिकल रिर्सोसिस।
10. कोक्स, पी0,: डेमोग्राफी।
11. ए0जे0कोले व हूवरः पोपूलेशन ग्रोथ एण्ड इकोनोमिक डवलपमेन्ट ऑफ इण्डिया।

*****